सूफी संत

हमारे सिलसिले की निसवत नक्श बाद्या खानदान की है। यह सिलसिला मुसलमान सूफी-संतों का है। सूफीमत सिद्धान्त चक्र विद्या पर आधारित है। इसके अनुसार मनुष्य के पिन्ड या नर-देह में, सिर की चोटी के पास, मस्तिष्क के भीतर दो ग्रन्थियाँ हैं जिन्हें सेरीबेलम तथा सेरीब्रम कहते है। सेरीब्रम का ही नाम शिरोब्रह्म है। इन्हीं दोनो ग्रन्थियों के बीच में एक छोटा सा रिक्त स्थान है जिसे स्वर्णमय कोष कहते हैं। इस स्थल पर एक गाढ़ा सा स्वर्ण रंग का पानी सा है जिसे ब्रह्ममरन्ध्र या ब्रह्मकोष कहते हैं। इसी ब्रह्मम रंध्र में आत्मा का वास होता है। आत्मा परमपिता परमात्मा का अंश है। इस आत्मा रूप सूर्य की छाया, पूरे शरीर के विभिन्न स्थानों या मुकामों से शरीर के शिराओं व रक्त के दबाब के द्वारा होती हुई, जाकर गुदा चक्र पर स्थित हो जाती है। सिर की चोटी के स्थान से आत्मा का प्रवेश होने के कारण ही हिन्दुओं में चोटी रखने का और मुसलमानों में गोलाकार उस्तरा फिरवाने की प्रथा है। मनुष्य की मृत्यु के पश्चात कपाल क्रिया सिर के उसी भाग में करने का यथार्थ अर्थ यही है।

जिस प्रकार यह संसार सत, रज, तम से युक्त है, ठीक उसी प्रकार यह नर-शरीर भी तीन शरीरों से मिलकर बना है- 1. स्थूल शरीर 2. सूक्ष्म शरीर, तथा 3. कारण शरीर! इन तीनों के भी छः-छः उपभाग है। इस प्रकार कुल मिलाकर 18 अंग है। सूफियों या संतमत के अनुसार नरदेह में आत्मा आज्ञा चक्र पर जो दोनों भौंहों के बीच में है, वहाँ बैठकर सारे नर शरीर का पालन-पोषण करती है। इसी स्थान को ईद का चाँद या शिवनेत्र भी कहते हैं। मुसलमानों में इसे 'नुक्तये सवेदा' भी कहते हैं। साधक को अपनी आत्मा की धार उलट कर पुनः उसी स्थन पर पहुँचाना ही साधना है। यही आत्मा की चढ़ाई है तथा इसी को साधन चतुष्टय भी कहते हैं।

परमपिता परमेश्वर एक है उसके नाम अनगिनत है! उसके रूप की कोई सीमा नहीं, वह आकार रहित, निर्विकार, अनामी है जिसका न कोई आदि और न अंत है।

जिस प्रकार ईश्वर एक है, उसी प्रकार ईश्वर की प्राप्ति का एक ही रास्ता है गुरू धारण कर आत्मा का साक्षात्कार! प्रभु प्राप्ति का एक ही रास्ता है, गुरू प्रेम की कृपा द्वारा आत्मा का साक्षात्कार! ईश्वर की प्राप्ति गुरू धारण किए बिना नहीं हो सकती। सद्गुरू की सहायता के बिना किसी की शक्ति नहीं कि जो मन के घाट को बदल कर घट में प्रभु के दर्शन करा सके।

गुरू के पास जब कोई जिज्ञासु आता है, और वह प्रेम से पूर्ण होता है, तो वे उसके जन्मों के संस्कार काट कर जिज्ञासु को अपनी आत्म शक्ति से ऊपर तक की चढ़ाई कराकर, उसकी आत्मा का साक्षात्कार करा देते हैं, इसके पश्चात जब साधक स्वयं उसकी चढ़ाई करता है तब उसको सब अनुभव स्पष्ट रूप से होते जाते हैं। सद्गुरू साधक की स्थिति का ज्ञान करके उसको, उसके अनुरूप ही साधन बताते हैं। आमतौर पर जिसमें प्रेम का

माद्दा अधिक हो उसे हृदय चक्र के मुकाम पर ऊँ शब्द का या जो शब्द साधक के प्रिय हो जैस राम-कृष्ण, आदि का जाप बताते है और कभी-2 किसी को आज्ञा-चक्र के स्थन पर प्रकाश का ध्यान करने को बताते हैं।